IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अभियान ही नहीं, राष्ट्रीय चेतना है आध्यात्म

अमरसिंह मीना (शोधार्थी)

शोध पर्यवेक्षक:- डॉ. मनोज अवस्थी (आचार्य- राजनीतिशास्त्र) सम्राट पृथ्वीराज चौहान महाविद्यालयए अजमेर (राजस्थान)

श्री अरबिंद के आध्यात्म की आधारशिला "समग्र योग" की भावना में निहित है। उनके अनुसार आध्यत्म जीवन से पलायन नहीं, बल्कि जीवन का दिव्य रूपांतरण है। वे मानते थे कि मानव केवल शरीर

और बुद्धि तक सीमित नहीं, बल्कि उसके भीतर एक दिव्य चेतना सुप्त अवस्था में विद्यमान है। साधना का उद्देश्य उस अंतःस्थित शक्ति को जागृत कर मन, प्राण और शरीर का संतुलित विकास करना है।

उनकी दृष्टि में कर्म, ज्ञान और भक्ति तीनों मार्ग परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक ही परम सत्य की ओर ले जाने वाले समन्वित साधन हैं। वे 'सुप्रामानस' चेतना की स्थापना की बात करते हैं, जो मानव को सीमित अहंकार से मुक्त कर व्यापक सार्वभौमिक चेतना से जोड़ती है। उनका आध्यात्म राष्ट्र और मानवता के उत्कर्ष का साधन है–जहाँ व्यक्ति आत्मोन्नति के साथ समाज और विश्व के कल्याण का भी पथ प्रशस्त करता है। भारत की आत्मा केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं में नहीं, बल्कि उसकी आध्यात्मिक चेतना में निवास करती है। यहाँ आध्यात्म किसी संकीर्ण साधना या व्यक्तिगत मोक्ष का साधन मात्र नहीं, बल्कि जीवन और समाज को दिशा देने वाली व्यापक राष्ट्रीय शक्ति है। श्री अरबिंदो ने इसी आध्यात्म को एक अभियान नहीं, बल्कि राष्ट्र की चेतना के रूप में देखा। उनके विचारों में आध्यात्म और राष्ट्रवाद परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।

श्री अरबिंदो के अनुसार भारत का अस्तित्व उसकी आध्यात्मिक परंपरा से जुड़ा है। यदि भारत अपनी आत्मा को पहचान ले, तो वह विश्व को मार्गदर्शन दे सकता है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत का उत्थान केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से पूर्ण नहीं होगा; इसके लिए आत्मिक जागरण आवश्यक है। उनके लिए स्वाधीनता का अर्थ केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी दिव्यता का प्राकट्य था। इस दृष्टि से आध्यात्म एक निजी साधना न रहकर राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आधार बन जाता है।

भारत की संस्कृति ने सदैव आत्मा की प्रधानता को स्वीकार किया है। वेदों से लेकर उपनिषदों तक और संत परंपरा से लेकर आधुनिक चिंतन तक, हर युग में आध्यात्मिक दृष्टि ने समाज को दिशा दी है। श्री अरविन्दो ने इसी परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनः व्याख्यायित किया।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र भी एक जीवंत सत्ता है, जिसकी अपनी आत्मा होती है। जब राष्ट्र अपनी आत्मा के अनुरूप आचरण करता है, तभी उसका विकास संतुलित और सार्थक होता है।

उनकी दृष्टि में आध्यात्म पलायन नहीं, कर्म का आधार है। उन्होंने कर्मयोग की व्याख्या करते हुए बताया कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र–शिक्षा, राजनीति, समाज, साहित्य–में आध्यात्मिक दृष्टिकोण आवश्यक है। यदि मनुष्य अपने कार्य को ईश्वरार्पण भाव से करे, तो वही कार्य साधना बन जाता है। इस प्रकार राष्ट्र-निर्माण भी एक आध्यात्मिक साधना का रूप ले सकता है। यही विचार उन्हें विशिष्ट बनाता है कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को भी आध्यात्मिक अभियान क

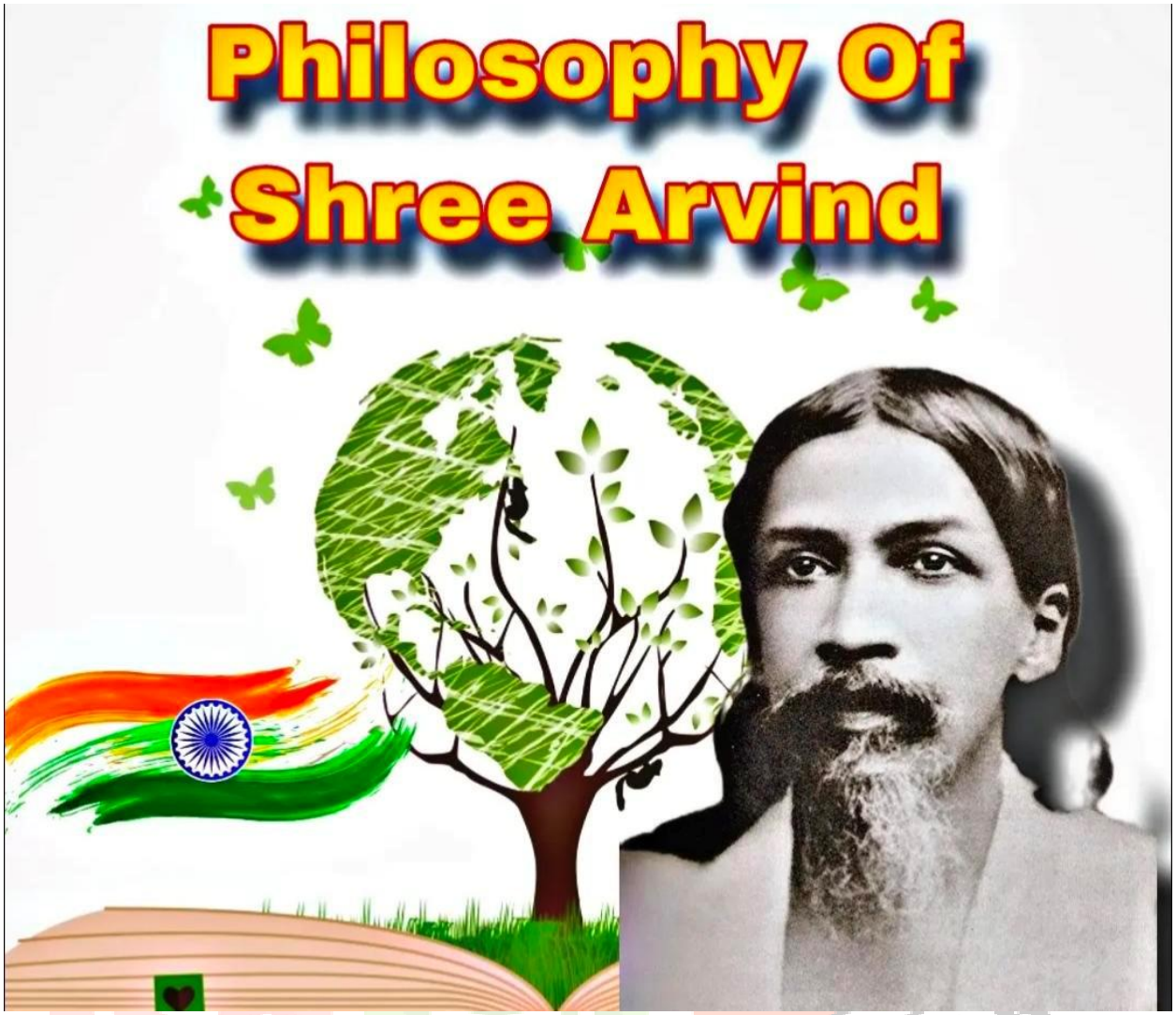

यही विचार उन्हें विशिष्ट बनाता है कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को भी आध्यात्मिक अभियान का स्पष्ट रूप दिया। अरबिंदो का मानना था कि भारत का भविष्य केवल भौतिक उन्नति में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक नेतृत्व में निहित है। पश्चिमी सभ्यता ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अद्‌भुत प्रगति की, परंतु उससे उत्पन्न असंतुलन ने मानवता को अनेक संकटों में डाल दिया। ऐसे समय में भारत की आध्यात्मिक दृष्टि विश्व को संतुलन और समरसता का मार्ग दिखा सकती है। इसीलिए उन्होंने कहा कि भारत का उत्थान विश्व-कल्याण से जुड़ा है।

उनकी शिक्षा में 'समन्वय' का विशेष महत्व है। वे भौतिक और आध्यात्मिक, पूर्व और पश्चिम, विज्ञान और धर्म के बीच सामंजस्य स्थापित करना चाहते थे। उनके अनुसार सच्चा आध्यात्म जीवन से अलग नहीं, बल्कि जीवन को उन्नत बनाने वाला तत्व है। जब राष्ट्र के नागरिक आत्मिक दृष्टि से जाग्रत होते हैं, तब उनमें नैतिकता, अनुशासन और कर्तव्यबोध स्वतः विकसित होता है। यही राष्ट्रीय चेतना का आधार है।

आज के संदर्भ में श्री अरबिंदो के विचार और भी प्रासंगिक हो उठते हैं। भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा और उपभोग की अंधी दौड़ में मनुष्य भीतर से रिक्त होता जा रहा है। ऐसे समय में आध्यात्म को पुनः राष्ट्रीय चेतना के रूप में स्थापित करना आवश्यक है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न

रहकर जीवन-मूल्यों का संवाहक बने। सत्य, करुणा, सेवा और समर्पण जैसे गुण जब राष्ट्रीय जीवन का अंग बनते हैं, तभी राष्ट्र सशक्त होता है।

अतः कहा जा सकता है कि श्री अरविन्दो के लिए आध्यात्म कोई सीमित अभियान नहीं था, जिसे कुछ समय के लिए चलाया जाए। वह राष्ट्र की आत्मा का स्थायी स्वर है। जब तक भारत अपनी आध्यात्मिक चेतना से जुड़ा रहेगा, तब तक उसकी पहचान और शक्ति अक्षुण्ण रहेगी। उनका संदेश हमें स्मरण कराता है कि सच्ची स्वतंत्रता बाह्य बंधनों से मुक्ति के साथ-साथ आंतरिक जागरण में निहित है। यही जागरण राष्ट्र को ऊँचाइयों तक ले जाता है।

इस प्रकार श्री अरबिंदो का चिंतन हमें यह समझाता है कि आध्यात्म व्यक्तिगत साधना से आगे बढ़कर राष्ट्रीय जीवन की प्रेरक शक्ति है। यह अभियान नहीं, बल्कि ऐसी चेतना है जो पीढ़ियों को दिशा देती है, समाज को एक सूत्र में बाँधती है और मानवता को प्रकाश की ओर अग्रसर करती है।